3. गोस्वामी तुलसीदास

हिंदी साहित्याकाश में सूर्य की तरह दैदीप्यमान, भक्त चूड़ामणि, कुलमयङ्क गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन 1532 में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के अंतर्गत राजापुर गाँव में हुआ था। तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे, माता का नाम हुलसी था। जनश्रुति के अनुसार उनका विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली के साथ हुआ और उन्हें तारक नाम का पुत्र भी हुआ था जिसकी मृत्यु हो गई थी। तुलसीदास का बचपन का नाम रामबोला था। कहा जाता है कि रामबोला अशुभ नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता–पिता ने बालक को त्यागकर उसके पालन का भार दासी मुनिया पर सौंपा था। दुर्भाग्य से पालन–पोषण करनेवाली दासी मुनिया भी पाँच वर्ष के अबोध रामबोला को भीख के अन्नपर जीने के लिए छोड़कर परलोक चली गई। उनके पश्चात बालक रामबोला का पालन–पोषण बाबा नरहरीदास ने किया, वही बालक आगे चलकर अपने कर्तव्य कर्म से गोस्वामी तुलसीदास नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बाबा नरहरीदास गोस्वामी तुलसीदास के गुरु थे जिन्होंने रामकथा सुनाकर उन्हें राम–भक्ति की ओर उन्मुख किया था। यह भी कहा जाता है कि अत्यधिक आसक्ति से उन्हें पत्नी रत्नावली की मीठी भर्त्सना सुननी पडी थी –

"लाज न लागत आपको दौरे आयहु नाथ,
धिक्–धिक् ऐसे प्रेम को कहा कहु मैं नाथ।"

इससे उनके जीवन में अचानक परिवर्तन आया और वे राम भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति–काल के अंतर्गत निर्गुण–भक्ति और सगुण–भक्ति दो मुख्य धाराएं प्रवाहमान रही है, उनमें से सगुण–भक्ति के अंतर्गत राम–भक्ति और कृष्ण–भक्ति दो उपधाराएं हैं। इनमें से राम–भक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास को माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने विष्णु के अवतार दशरथ पुत्र राम को आराध्य मानकर अपनी भक्ति–भावना को अभिव्यक्त किया है। इस भक्ति की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं की सहायता ली है।

रचनाएँ– तुलसीदास के काव्य ग्रंथों के संदर्भ में विविध विद्वानों में काफी मतभेद हैं। अधिकतर विद्वान् तुलसीदास द्वारा रचित बारह रचनाओं को प्रामाणिक मानते हैं। जैसे– रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, राम गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, रामचरितमानस, बरवै रामायण, दोहावली, कवितावली, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदीपनी आदि इनकी चर्चित

रचनाएँ हैं। तुलसीदास का समग्र साहित्य समन्वय की एक विराट चेष्टा है क्योंकि इन रचनाओं में उन्होंने सगुण–निर्गुण, शैव– वैष्णव, द्वैत–अद्वैत, ज्ञान और भक्ति आदि में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है।

'रामचरितमानस' यह हिंदी साहित्य का एक सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है। तुलसीदास ने इसे संवत् 1631 से आरंभ किया था। दो वर्ष, सात महीने, छब्बीस दिन में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ। अर्थात संवत् 1633 के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में रामविवाह के दिन इस रचना के सातों कांड पूर्ण हुए थे। 'रामचरितमानस' एक सात कांडों में (बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किषकिंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड, उत्तरकांड) लिखा गया चरित काव्य हैं, जिसमें आदर्श पिता, आदर्श बेटा, आदर्श भाई, आदर्श माँ, आदर्श सेवक, आदर्श मित्र, आदर्श बहू आदि विविध आदर्शों की स्थापना हुई है। इस रचना की कथावस्तु में राम का संपूर्ण जीवन चित्रित हुआ है। राम का अयोध्या त्याग, बन गमन, चित्रकूट में राम और भरत का मिलन, केवट प्रसंग, शबरी का आतिथ्य, लक्ष्मण को शक्ति लगना और राम का विलाप, भरत की प्रतीक्षा आदि राम–कथा के मार्मिक स्थलों को तुलसीदास ने मार्मिकता के साथ जनता के सामने प्रस्तुत किया है। वास्तविक लोकधर्म की व्यवस्था का पालन करने के लिए उन्होंने राम–भक्ति के निरूपण में सब धर्मों, सब संप्रदायों, सब वर्णों, सबके देवी–देवताओं, पारिवारिक जीवन की समस्त गतिविधियों, सब प्रकार के दोस्तों, सज्जनों, समाज और देश की समस्त उच्च भावनाओंका, ज्ञान और भक्ति के समस्त दार्शनिक विचारोंका, अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि का सुंदरता से समन्वय कर जिस लोक–धर्म की उद्भावना की है वही वस्तुतः मानव धर्म है।

आज 'रामचरितमानस' की रचना भारतवर्ष के ही नहीं, समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। भारतवर्ष में तो बच्चों से लेकर वृद्धों तक सभी इस ग्रंथ को अपने सिर पर रखते हैं। 'रामचरितमानस' अवधी भाषा की एक उत्कृष्ट रचना है इसमें मुख्य छंद चौपाई है। इसके साथ–साथ दोहा, सोरठा, हरिगीतिका आदि छंदों का भी सुंदर प्रयोग किया गया है। तुलसीदास ने यह रचना स्वान्तः सुखाय के लिए लिखी थी, जो सर्व हिताय बन गई। तुलसीदास के प्रखर व्यक्तित्व को लेकर डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि, "तुलसीदास का महत्व बताने के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनामूलक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने अपने भक्तमाल में इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा था, स्मिथ ने उन्हें मुगलकाल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा है। यह तो बहुत बार बहुत लोगों ने कहा है कि उनकी रामायण भारत की बाईबल है। यह सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे।" इस प्रकार संपूर्ण विश्व में एक प्रभावी और प्रतिभाशाली संत

एवं कवि के रूप में गोस्वामी तुलसीदास हमारे सामने आ जाते हैं। उनके द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' की कथा में से 'शबरी प्रसंग' को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

शबरी प्रसंग– गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' के अंतर्गत अरण्यकांड में से यह 'शबरी प्रसंग' लिया गया है। इस प्रसंग की विशेषता यह है कि शबरी नामक एक निम्न जाति की स्वयं को तुच्छ समझनेवाली स्त्री के आश्रम में जाकर प्रभु रामचंद्र स्वयं शबरी की जाति, धर्म देखें बिना शबरी द्वारा दिए गए फलों का प्रेम सहित सेवन करते हैं। यहाँ उनका भक्तवत्सल रूप हमारे सामने आ जाता है। इतना ही नहीं प्रभु राम शंबरी को 'नवधा–भक्ति' प्रदान करते हैं, जो बड़े–बड़े तपस्वी को भी मिलना दुर्लभ होती है। कहने का तात्पर्य है कि भक्ति के लिए किसी धर्म, संप्रदाय, जाति, लिंग, आयु, की आवश्यकता नहीं होती। सच्चे मन से कोई भी अगर भक्ति करता है, तो उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है। वह ईश्वर की भक्ति को प्राप्त कर सकता है। यही तुलसीदास ने इस प्रसंग में से बताने का प्रयास किया है, जो आज के संदर्भ में समाज में जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंगभेद, आयु, देश, काल के परे जाकर सभी में मानवता और समता की स्थापना करने में सहायक साबित होता है।

शबरी प्रसंग के बारे में कहना हो तो रावन द्वारा सीता–हरण के पश्चात जब प्रभु रामचंद्र अपने भाई लक्ष्मण के साथ शबरी के आश्रम में आते हैं, जहाँ वर्षों से प्रभु के दर्शन की अभिलाषा में बैठी शबरी जब ऋषि–मुनि के वेश में पधारे दो भाइयों को देखती है, तो आनंद से गदगद हो जाती है। उनके प्रेम में वह इतनी मग्न होकर उनकी तरफ देखने लगती है कि उसके मुख से कोई वचन नहीं निकलते। बार–बार वह प्रभु राम के चरण कमलों में अपना सिर नवाने लगती है। पुनः वह जल लेकर आदर पूर्वक दोनों भाइयों के चरण धोती है और उन्हें सुंदर आसनों पर बिठाती है। दोनों आसन पर बैठने के बाद शबरी अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कंद, मूल और फल लाकर प्रभु राम जी को देती है, जिसे प्रभु राम बार–बार प्रशंसा करते हुए प्रेम के साथ खाने लगते हैं। शबरी सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है और प्रभु को देखकर कहने लगती है कि हे प्रभु ! जो अधम से भी अधम है, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यंत अधम हैं, और उनमें भी मैं तो मंदबुद्धि हूँ। यह सुनकर श्री रघुनाथ जी ने कहा, हे भामिनी ! मेरी बात सुन। चाहे किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय का मनुष्य हो या कोई स्त्री हो, मैं तो केवल एक भक्तिही का संबंध मानता हूँ। जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता इन सबके होनेपर भी भक्ति से रहित मनुष्य ऐसा लगता है, जैसे जलहीन बादल दिखाई पड़ता है।

...anand College Of Arts, ...
11619?

प्रभु राम शबरी को कहते हैं कि मैं तुझसे अब अपनी 'नवधा–भक्ति' कहता हूँ। तू सावधान होकर उसे ध्यान से सुन और अपने मन में धारण कर। प्रभु रामचंद्र शबरी को अपनी नवधा–भक्ति बताते हुए कहते हैं कि, पहली भक्ति है संतों का सत्संग। दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम रखना। तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा करना। चौथी भक्ति यह है कि, कपट छोड़कर मेरे गुणसमूहों का गान करें। पाँचवी भक्ति जो वेदों में प्रसिद्ध है जिसमें मेरे (राम) मंत्र का जाप करते हुए मुझमें दृढ़ विश्वास रखना है। छठी भक्ति है इंद्रियोंका निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना। सातवीं भक्ति है समस्त जगत् को समभाव से मुझमें ओतप्रोत (राममय) देखना और संतो को मुझसे भी अधिक करके मानना। आठवीं भक्ति है जो कुछ मिल जाय, उसीमें संतोष करना और स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। नवीं भक्ति है सरलता और सब के साथ कपटरहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विषाद) का न होना। इन नवधा–भक्ति में से जिनके पास एक भी भक्ति होती है, वह चाहे स्त्री, पुरुष, जड़, चेतन कोई भी हो, वह मेरे लिए अत्यंत प्रिय है। फिर तुझमें तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वह आज तेरे लिए सुलभ हो गई है।

यहाँ राजा प्रभु राम ने एक दीन हीन, गरीब शबरी जैसी स्त्री को अपनी 'नवधा–भक्ति' प्रदान कर जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंगभेद, आयु, काल आदि के परे जाकर अपने भक्त–वत्सल रूप को दिखाते हुए समाज में समता एवं मानवता की स्थापना की है। निश्चित ही यह शबरी प्रसंग आज भी नवधा-भक्ति के माध्यम से स्त्री–पुरुष, उच्च–नीचता, धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि का भेद न मानते हुए सभी को एकता एवं समानता से देखने की और खासकर स्त्री की ओर सम्मान एवं आदर से देखने की तथा उनके साथ समानता का बर्ताव करने की हमें सीख देता है।

शबरी प्रसंग

प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा।।
सादर जल लै चरण पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ।।1।।

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ।।2।।

अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।।
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानऊँ एक भगति कर नाता।।3।।

जाति पाँति कुल धर्म बडाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।4।।

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।5।।

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।।6।।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा ।।7।।

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा।।8।।

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।9।।

सोही अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ तोरें।।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई।।10।।